1967 में विरोधी सेनाओं की तुलनात्मक सैन्य क्षमता

प्रो0 सतीश चन्द्र पाण्डेय,
आचार्य,
रक्षा एवं स्त्रातजिक अध्ययन विभाग,
दी0द0उ0गोरखपुर विश्वविद्यालय,
गोरखपुर।

किसी राष्ट्र का भौगोलिक वातावरण उसकी सैन्य आवश्यकताओं के निर्धारण में एक महत्वपूर्ण तत्व है। भौगोलिक वातावरण और खतरों की ग्राह्यता तुलनात्मक सैन्य संतुलन को प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करते हैं। सैन्य संतुलन के गुणात्मक और परिमाणात्मक दोनों पहलू प्रधान होते हैं क्योंकि बिना अभिप्रेरणा और दृढ़ संगठन के मात्र हथियार अधिक कारगर नहीं हो सकते। इन समस्त बातों को ध्यान में रखते हुए तत्कालीन सैन्य संतुलन का वर्णन निम्न प्रकार हैं–

इजराइली प्रतिरक्षा बल या जहाल–

ब्रिटिश अधिदेश काल में अरब हमलों से यहूदी बस्तियों की रक्षा के लिए गठित की गयी सैनिक टुकड़ियों (हागनाह) ने इजराइली प्रतिरक्षा सेनाओं के विकास में योगदान किया। इजराइली प्रतिरक्षा सेनाओं में अनिवार्य सैनिक सेवा द्वारा भर्ती किये गये सैनिक और रिजर्व सैनिक रीढ़ की हड्डी के समान थे। 1955 में जनरल मोसे दायान के स्थल सेना प्रमुख नियुक्त होने पर एक नियमित स्थल सेना का गठन किया गया था और भारी संख्या में रिजर्व सैनिकों को आपातकालीन सेवा के लिए रखा गया था। नियमित सेना में केवल दो हजार अधिकारी और सैनिक थे जबकि 72000 अनिवार्य सैनिक सेवा के लिए भर्ती किये गये थे। अनिवार्य सैनिक सेवा स्त्री और पुरूष दोनों के लिए लागू थी। पुरूषों के लिए प्रारम्भिक प्रशिक्षण का समय 30 माह और स्त्रियों के लिए 20 माह का था। इसके अतिरिक्त प्रतिवर्ष सबको (स्त्री और पुरूष) 30 दिनों का प्रशिक्षण दिया जाता था जिसमें रिजर्व सैनिक भी सम्मिलित किये जाते थे पुरूष और स्त्री सैनिक क्रमशः 45 वर्ष और 40 वर्ष की आयु तक पहुंच जाने के बाद गृहरक्षा इकाइयों में भेज दिये जाते थे। विभिन्न सैनिक इकाइयाँ सैन्य संक्रियात्मक भूमिका निभाने के लिए विभिन्न क्षेत्रों में लगायी गयी थी और निकट ही उनके मुख्यालय थे। पारस्परिक सम्पर्क के माध्यमों की ऐसी उपयुक्त व्यवस्था थी कि 24 घण्टे के अन्दर 15000 सैनिक एकत्र किये जा सकते थे।

इजराइली प्रतिरक्षा सैन्य बलों का संगठन–

इजराइली मंत्रीमण्डल वह सर्वोच्च अंग था जो प्रतिरक्षा मंत्री द्वारा प्रतिरक्षा सेनाओं पर नियंत्रण रखता था। प्रतिरक्षा मंत्री द्वारा प्रतिरक्षा सेनाओं पर नियंत्रण रखता था। प्रतिरक्षा मंत्रालय वित्तीय नियोजन, रक्षा अनुसंधान और विकास तथा सैन्य उपकरणों के संचय के लिए उत्तरदायी था। इजराइली प्रतिरक्षा सैन्य बलों का प्रमुख प्रतिरक्षा मंत्री के अधीन होता था तथा वह राजनीतिक और सैनिक अंग के मध्य एक कड़ी की भूमिका निभाता था। वायु सेनायें और नौ सेनायें पृथक सेनायें न होकर इजराइली प्रतिरक्षा सैन्य बलों की अंग थीं। स्थल सेना की विरचना एक ब्रिगेड होती थी।

इजराइल की पैदल सेना और कवचधारी सेना–

इजराइल की स्थल सेना में 31 ब्रिगेड थे। इनमें से 22 पैदल ब्रिगेड थे 4500 सैनिक थे जो तीन बटालियनों में विभक्त थे। इनके साथ तो तोपखाना, सिगनल और इन्जीनियर्स सहायक अंग के रूप में थे। सभी पैदल ब्रिगेड मोटर युक्त थे जिससे उनकी स्त्रातजिक गतिशीलता अधिक थी।

इजराइल के पास 8 कवचित ब्रिगेड थे। प्रत्येक ब्रिगेड में 3500 सैनिक थे। प्रत्येक ब्रिगेड में दो पैदल बटालियन और एक यंत्रीकृत पैदल सैन्य बल था। लगभग 800 टैंकों में से 105 मि0मी0 गन से युक्त 250 ब्रिटिश सेंचुनियन टैंक, 90 मि0मी0 गन से युक्त 200 एम–48 पैटन टैंक, 75 मि0मी0 गन से युक्त 150 AMX-13 टैंक और 76 मि0मी0 गन से युक्त 200 सुपर शर्मन बैंक थे। कठिन प्रशिक्षण के बल पर टैंक चालक सैनिक इतने दक्ष हो गये थे लम्बी दूरी पर स्थित लक्ष्य को प्रथम प्रहार में ही भेद सकते थे।

इजराइल की गुप्तचर व्यवस्था और इलेक्ट्रानिक युद्धकर्म की क्षमता–

इजराइली गुप्तचर व्यवस्था का निदेशक स्टाफ प्रमुख के अधीन होता था और उसके अधीन आवश्यक सुविधाओं से सुसज्जित गुप्तचर विभाग था मोसाद (Mossad) गुप्त सूचनायें प्राप्त करने वाली केन्द्रीय संस्था थी। इजराइली सैन्य आसूचना संगठन समूचे मध्य–पूर्व में अपनी प्रभावकारिता के लिए प्रसिद्ध था। इजराइलियों ने संयुक्त राज्य अमेरिका की सहायता से सिगनल इण्टेलीजेन्स का गठन कर लिया था जो रेडियो सम्प्रेषणों को अवरूद्ध करने में समक्ष था।

इजराइल ने 1967 के युद्ध में इलेक्ट्रानिक युद्धकर्म में अपनी श्रेष्ठता सिद्ध कर दी थी। इलेक्ट्रानिक साधनों का प्रयोग करके युद्ध में इजराइलियों ने अपने विरोधियों के राडारों को जामकर दिया और उनकी सेनाओं के पारस्परिक सम्पर्क को बीच में ही काटने में उल्लेखनीय सफलता प्राप्त की थी।

जार्डन की सशस्त्र सेनायें–

जार्डन की स्थल सेना में 55000 सैनिक थे। 1967 के युद्ध के दौरान जनरल एन0मसाली थल सेना के मुख्य सेनानायक थे। थल सेना में 176M-48 पैटन टैंक थे जो दो कवचित ब्रिगेडों में वितरित थे। एक यंत्रीकृत ब्रिगेट था जो M-113 कवचित कार्मिक वाहनों से युक्त था। 7 पैदल सेना के ब्रिगेड थे जिनमें अधिकांशत पश्चिमी तट के फिलीस्तीनी क्षेत्र के सैनिक थे। तोपखाने में लगभग 150 तोपें थी जिनमें 25 पाउण्डर ब्रिटिश तोपें थ।

सीरिया की सशस्त्र सेनायें–

सीरिया की स्थल सेना में 1967 के युद्ध के प्रारम्भ के समय 60000 सैनिक थे जो दो कवचधारी, 2 यंत्रीकृत और 5 पैदल ब्रिगेडों में संगठित किये गये थे। ये सैनिक अनिवार्य सैन्य सेवा द्वारा चयनित थे। इनके साथ 40000 प्रशिक्षित रिजर्व सैनिक थे। सीरिया की थल सेना में 550T-54 तथा T-55 टैंक एवं 500 सोवियत निर्मित्त कवचित कार्मिक वाहन थे। सीरियाई तोपखाने में 130 मि0मी0 और 100 मि0मी0 की 1200 तोपें और कुछ कत्युशा राकेट लांचर्स थे।

इराक की सशस्त्र सेनायें–

इराक की इजराइल से लगी हुई कोई सीमा नहीं है लेकिन इराक ने मिस्र को सहायता का वचन दिया था। इराक की थल सेना में 70000 सैनिक थे जो 2 पैदल डिवीजन और 1 कवचित डिविजन में संगठित थे। इराक की सेना के अधिकांश सैनिक कुर्द विद्रोहियों के दमन में लगे हुए थे। इसलिए जार्डन की सहायता के लिए इराक ने केवल एक डिवीजन भेजने का वचन दिया। इराकी डिवीजन 5 जून 1967 के इजराइली हवाई आक्रमण के दबाव के कारण असंगठित हो गया और जार्डन के मोर्चे पर नहीं पहुँच पाया।

सऊदी अरब की सशस्त्र सेनायें–

सऊदी अरब की थल सेना में 30000 सैनिक थे जो 5 मोटरयुक्त ब्रिगेडों में संगठित थे। सऊदी सैनिक टुकड़ियों ने 1967 के युद्ध में कोई भाग नहीं लिया क्योंकि मिस्र, और जार्डन के बीच हस्ताक्षरित रक्षा संधि को लेकर सऊदी और जार्डन में राजनीतिक मतभेद उत्पन्न हो गये थे।

मिस्र की सशस्त्र सेनायें–

मिस्र की सशस्त्र सेनायें परम्परागत आधार पर संगठित की गयी थी–

संगठन–

राष्ट्रपति नासिर मिस्र की सशक्त सेनाओं के सर्वोच्च कमाण्डर थे और सभी महत्वपूर्ण मामले की देख–रेख करके निर्णय लेते थे। नासिर के नियंत्रण में रक्षा मंत्री एस0 वदरान प्रशासन का काम सम्भाले हुए थे। फील्ड मार्शल आमेर मुख्य सेनानायक थे जो राष्ट्रपति नासिर के निर्देशों को क्रियान्वित करते थे। नौ सेना और वायु सेना अलग–अलग थीं और उनके अपने अलग–अलग स्टाफ प्रमुख थे। तीनों प्रकार की सेनायें मुख्यालय स्तर पर संक्रियात्मक समन्वय स्थापित कर सकती थीं।

स्थल सेना में लगभग 160000 सैनिक थे जिसमें नियमित और चयनित अनिवार्य सैन्य सेवी थे। इसके अतिरिक्त 60000 नेशनल गार्डों की आरक्षित संख्या थी नियमित सेनाओं का प्रशिक्षण और मनोबल अच्छा था।

मिस्र की कवचधारी सेनायें–

मिस्र की कवचित सेना में 1180 टैंक थे जो तीन कवचित डिवीजनों में वितरित थे। प्रत्येक डिवीजन में 3 कवचित ब्रिगेड और प्रत्येक कवचित ब्रिगेड में 3 कवचित बटालियनें थी। प्रत्येक कवचित डिवीजन में 300 टैंक थे। शेष टैंकों को पैदल सेना की विरचनाओं के साथ रखा गया था। इस प्रकार कवचित सेना में 85 मि0मी0 गन से युक्त 450T-34 टैंक, 100 मि0मी0 गन से युक्त 500T-54 और T-55 टैंक की व्यवस्था थी। इसके अतिरिक्त 100 शर्मन टैंक, 30 सेंचुरियन टैंक और 20AMX-13 टैंक थे।

मिस्र का तोपखाना–

सोवियत निर्मित 1000 तोपों से सुसज्जित यह एक शक्तिशाली सेना का अंग था। इसमें 27 किमी0 मार करने वाली 130 मि0मी0 तोपें, 15 किमी0 तक मार करने वाली हाविज्तजर तोपें और 22 किमी0 तक मार करने वाली 100mm तोपें सम्मिलित थीं। इनके अतिरिक्त विमान भेदी तोपें थी जो राडार द्वारा नियंत्रित होती थीं। कुछ कत्युशा नामक राकेट लांचर थे जो 8 किमी0 तक मार करने की क्षमता रखते थे।

मिस्र की पैदल सेना–

मिस्र की सेना में अधिकांश पैदल चलने वाले सैनिक थे। इन्हें सोवियत प्रारूप पर आधारित 4 पैदल डिवीजनों में संगठित किया गया। इनको 9 पैदल बटालियन में बाँटा गया था। 15 कमाण्डों दल भी थे जिनमें से प्रत्येक में 200 सैनिक सम्मिलित थे।